

जीवनमुक्तगीता







॥ श्रीः ॥

वेदांतवागीशश्रीदत्तात्रेयप्रणीता

जीवन्मुक्तगीता.

मुरादाबादनिवासिश्रीपंडितवर्यज्वालानाथा-
ङ्गजव्रजरत्नभट्टाचार्यप्रणीतया
भाषाटीकया समेता.

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : दिसंबर २००५, सम्वत् २०६२

मूल्य : ५ रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

॥ श्रीः ॥

मुमुक्षुवर्ग !

समस्त मुमुक्षुजनोंके चरणारविन्दमें सादर यह निवेदन है कि, बौद्धमतावलम्बी मनुष्य जो शरीरके विनाशहीको मुक्ति मानते हैं, उनका कथन सर्वथा असङ्गत है, श्रीयुत दत्तात्रेयजीने उन बौद्धमतवालोंके अमान्य राद्धान्तका खण्डन कर इस "जीवन्मुक्तगीता" में जीवन्मुक्तका लक्षण सविस्तर वर्णन किया है सरल शुद्ध और सुबोध भाषानुवादसहित वह (जीवन्मुक्तगीता) आपकी भेंट है, कृपापूर्वक इसको अंगीकार कर कृतकार्य कीजिये ।

व्रजरत्नभट्टाचार्य.
मोहल्ला—गंज.
मुरादाबाद.

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीदत्तात्रेयप्रणीता

जीवन्मुक्तगीता.

भाषाटीकोपेता ।

अणोरणीयसे साक्षान्महतश्च महीयसे ।
आदिमध्यान्तहीनाय मह्यमेव नमो नमः ॥

जीवन्मुक्तिश्च या मुक्तिः सा मुक्तिः पिण्डपातने ॥
या मुक्तिः पिण्डपातेन सा मुक्तिः शुनि शूकरे॥ १॥

जीवन्मुक्तिरूप जो मुक्ति है, वोह मुक्ति यदि शरीरके पतनहीको माना जाय तौ, वोह शरीरपातरूप मुक्ति शूकर कूकर आदि समस्तहीको प्राप्त हो सकती है॥ १॥

जीवः शिवः सर्वमेव भूतेष्वेवं व्यवस्थितः ॥
एवमेवाभिपश्यन् हि जीवन्मुक्तः स उच्यते २॥

यह शिवरूप जीव सम्पूर्ण भूतोंमें चिदानन्दरूपसे स्थित है, इस प्रकार देखनेवाला मनुष्य जीवन्मुक्त कहा

जाता है, अर्थात् जीव और ईश्वरको अभेद दृष्टिसे देखनेवाले जनको जीवन्मुक्त कहते हैं ॥ २ ॥

एवं ब्रह्म जगत्सर्वमखिलं भासते रविः ॥
संस्थितं सर्वभूतानां जीवन्मुक्तः स उच्यते॥३॥

जिस प्रकार यह सूर्य स्वकीय किरणोंद्वारा निखिल ब्रह्माण्डको प्रकाशित करता है, तिसी प्रकार चैतन्यस्वरूप ब्रह्म जीवस्वरूप होकर सम्पूर्णका प्रकाशक होता हुआ सर्वत्र व्याप्त है, इस प्रकारके ज्ञानीको जीवन्मुक्त कहते हैं ॥ ३ ॥

एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥
आत्मज्ञानी तथैवैको जीवन्मुक्तः स उच्यते॥४॥

जैसे कि, अद्वितीय चन्द्रमा घटादि अनेक जलाशयोंमें नानारूपसे प्रतिबिम्बित होता है, परन्तु वास्तवमें वोह एकही है; वैसेही आत्मा अनेक देहोंमें भिन्न २ प्रतिबिम्बित होकरभी वोह एकही है, ऐसे आत्मज्ञानीको जीवन्मुक्त कहना चाहिये ॥ ४ ॥

सर्वभूते स्थितं ब्रह्म भेदाभेदो न विद्यते ॥
एकमेवाभिपश्यँश्च जीवन्मुक्तः स उच्यते ॥५॥

जो आत्माको सर्वभूतोंमें स्थित ब्रह्मस्वरूप जानता है, जो भेद और अभेदसे रहित अर्थात् जीवात्मा और परमात्मामें अभेद देखनेवाला है, और ज्ञानदृष्टिसे उसे एकही देखता है, उसको जीवन्मुक्त कहते हैं ॥ ५ ॥

तत्त्वं क्षेत्रं व्योमातीतमहं क्षेत्रज्ञ उच्यते ॥
अहं कर्त्ता च भोक्ता च जीवन्मुक्तः स उच्यते६॥

पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश इस पञ्च तत्त्वसे अतीत देहको क्षेत्र (लिंगदेह) कहते हैं, सो उस देहका क्षेत्रज्ञ (उसका ज्ञाता) मैंही हूं, और सम्पूर्णका कर्त्ता और भोक्ताभी मैंही हूं, ऐसे ज्ञानीको जीवन्मुक्त कहना चाहिये ॥ ६ ॥

कर्मेन्द्रियपरित्यागी ध्यानावर्जितचेतसः ॥
आत्मज्ञानी तथैवैको जीवन्मुक्तः स उच्यते७॥

जिसने पांच कर्मेन्द्रियोंको त्याग दिया अर्थात् अपने वशमें कर लिया. तथा जिसने मनको ध्यानादिक अनुष्ठानोंद्वारा निवृत्त कर आत्मामें लीन कर लिया, तिस आत्मज्ञानीको जीवन्मुक्त कहते हैं ॥ ७ ॥

शारीरं केवलं कर्म शोकमोहादिवर्जितम् ॥
शुभाशुभपरित्यागी जीवन्मुक्तः स उच्यते॥८॥

जिसने शोक मोहादिवर्जित शारीरक कर्मानुष्ठानको स्वीकार किया और शुभाशुभका परित्याग किया, उसीको जीवन्मुक्त कहना चाहिये ॥ ८ ॥

कर्म सर्वत्र आदिष्टं न जानाति च किञ्चन ॥
कर्म ब्रह्म विजानाति जीवन्मुक्तः स उच्यते९॥

शास्त्रप्रतिपादित कर्मकाण्डरहित हो जो उन कर्मोंको ब्रह्मस्वरूप जानता है, वह जीवन्मुक्त कहा जाता है ॥ ९ ॥

चिन्मयं व्यापितं सर्वमाकाशं जगदीश्वरम्॥
सहितं सर्वभूतानां जीवन्मुक्तःस उच्यते॥१०॥

ज्ञानस्वरूप, आकाशकी सदृश, सर्वव्यापक जगदीश्वर तथा सर्वभूतोंको चैतन्य करनेवाले आत्मज्ञानीको जीवन्मुक्त कहते हैं॥ १०॥

अनादिवर्ती भूतानां जीवः शिवो न हन्यते॥
निर्वैरः सर्वभूतेषु जीवन्मुक्तः स उच्यते॥११॥

समस्त प्राणिमात्रमें निर्वैर शिवरूप जीवात्माको सब प्राणियोंका अनादिवर्त्ती जाननेवालेको जीवन्मुक्त कहते हैं॥ ११॥

आत्मा गुरुस्त्वं विश्वं च चिदाकाशो न लिप्यते॥
गतागतं द्वयोर्नास्ति जीवन्मुक्तः स उच्यते॥१२॥

चिद्रूप तथा समस्तका परमात्माही सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका पालनकर्त्ता होकरभी संसारमें लिप्त नहीं होता अर्थात् संसार और आत्मामें अभेद मानता और अद्वितीय है,ऐसे जाननेवालेको जीवन्मुक्त कहना चाहिये१२

गर्भध्यानेन पश्यन्ति ज्ञानिनां मन उच्यते ॥
सोऽहं मनो विलीयन्ते जीवन्मुक्तः स उच्यते १३

गर्भध्यान (अन्तरके ध्यान) द्वारा ज्ञानिजनोंके मनको जो आत्माका स्पर्श हो और 'सोऽहं' (वह परमात्मा मैं हूं) ऐसी भावनाद्वारा परमात्मामें मनको लीन करनेवाले आत्मज्ञानीको जीवन्मुक्त कहा जाता है १३

ऊर्ध्वध्यानेन पश्यन्ति विज्ञानं मन उच्यते ॥
शून्यं लयं च विलयं जीवन्मुक्तः स उच्यते १४॥

जिसने समाधिमें स्थित हो मनको शून्य, लय और विलय इन तीनों मार्गोंसे संयुक्त किया है उसको जीवन्मुक्त कहते हैं ॥ १४ ॥

अभ्यासे रमते नित्यं मनो ध्यानलयङ्गतम् ॥
बन्धमोक्षद्वयं नास्ति जीवन्मुक्तः स उच्यते १५॥

जिसका मन नित्य श्रवण, मनन, निदिध्यासनद्वारा ध्यानमें लयको प्राप्त हो गया है और जो बन्ध तथा मोक्ष इन दोनोंसे रहित है उसको जीवन्मुक्त कहते हैं॥ १५॥

एकाकी रमते नित्यं स्वभावगुणवर्जितम् ॥
ब्रह्मज्ञानरसास्वादी जीवन्मुक्तः स उच्यते॥१६॥

जो नर एकाकी (अद्वितीय) होकर निरन्तर स्वाभाविक गुणोंका परित्याग कर ब्रह्मज्ञानरूप रसका स्वाद लेता है, उसको जीवन्मुक्त कहते हैं ॥ १६ ॥

हृदि ध्यानेन पश्यन्ति प्रकाशं क्रियते मनः ॥
सोऽहं हंसेति पश्यंति जीवन्मुक्तः स उच्यते१७॥

जिसने उक्त प्रकारसे अपने हृदयमें मनको प्रकाशरूप जानकर, वह परमात्मा मैंही हूं तथा ध्यानद्वारा अपनेको हंसरूप जाना, उसको जीवन्मुक्त कहते हैं॥१७॥

शिवशक्तिसमात्मानं पिण्डब्रह्माण्डमेव च ॥
चिदाकाशं हृदं मोहं जीवन्मुक्तः स उच्यते१८॥

शिवशक्तिकी समान देहरूप क्षुद्रब्रह्माण्ड तथा चराचरात्मक ब्रह्मांड इन दोनोंको एकात्मा (एकही) जानकर जिसने हार्दिक मोहको त्याग निश्चय किया, उसे जीवन्मुक्त कहते हैं ॥ १८ ॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिश्च तुरीयावास्थितं सदा ॥
सोऽहं मनो विलीयेत जीवन्मुक्तः स उच्यते १९॥

जिसका मन 'सोऽहं' (वह परमात्मा मैं हूं) इत्यादि उपासनाओंद्वारा जाग्रत् स्वप्न और सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओंका अतिक्रमण कर तुरीयावस्थामें प्राप्त हो, परमात्मामें लीन हुआ है उसको जीवन्मुक्त कहते हैं १९

सोऽहंस्थितं ज्ञानमिदं सूत्रेषु मणितुत्वरम् ॥
सोऽह ब्रह्म निराकारं जीवन्मुक्तः स उच्यते२०॥

निराकार जो ब्रह्म है वही 'सोहं' (वही आत्मा) और सोहंका ज्ञान (बोध) सूत्रमें मणियोंकी सदृश स्थित है, और वही मैं हूं ऐसा ज्ञाता अर्थात् सोहंके द्वारा जीव और आत्मामें अभेद जाननेवालेको जीवन्मुक्त कहते हैं ॥ २० ॥

मन एव मनुष्याणां भेदाभेदस्य कारणम् ॥
विकल्पनैव संकल्पो जीवन्मुक्तः स उच्यते२१॥

संकल्प और विकल्पात्मक यह मनही समस्त प्राणि-गणके भेद और अभेदका कारण है, इस प्रकारके जान-नेवालेको जीवन्मुक्त कहा जाता है ॥ २१ ॥

मन एव विदुः प्राज्ञाः सिद्धसिद्धान्त एव च ॥
सदा दृढं तदा मोक्षो जीवन्मुक्तः सउच्यते२२॥

सिद्धों (पंडितों) का यह सिद्धान्त (मत) है कि, विश्वासका कारण चित्तही है, पूर्वकथित गुणोंमें दृढ-ताही मुक्तिका कारण है, ऐसे निश्चयवाले जनको जीव-न्मुक्त कहते हैं ॥ २२ ॥

योगाभ्यासी मनःश्रेष्ठो अन्तस्त्यागी बहिर्जडः ॥
अन्तस्त्यागी बहिस्त्यागी जीवन्मुक्तः स उच्यते२३

इति श्रीवेदान्तकेसरि श्रीमद्दत्तात्रेयनिर्मिता
जीवन्मुक्तगीता समाप्ता ।

योगाभ्यासी मनको श्रेष्ठ जानना चाहिये, और यही मन अन्तरको त्याग बाह्य देशमें रमण करता है, तब जड

रूपही रहता है परन्तु, आभ्यन्तर और बाह्य इन दोनोंके परित्याग करनेवाले पुरुषको जीवन्मुक्त कहते हैं॥ २३॥

इति श्रीमदध्यात्मविचारनिरतकर्मठाग्र्यगण्यश्रीज्वाला-नाथसूरिसूनुव्रजरत्नभट्टाचार्य्यप्रणीतया हैन्दव्या व्याख्यया विभूषिता जीवन्मुक्तगीता सम्पूर्णा ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

